डायोरामा

गुरूकुल

१०′ X ३०′ X ११′

विश्वविद्यालय से उपाधियाँ पाकर या आजीविका की क्षमता अर्जित कर स्वयं को शिक्षित मानना अपने आपको धोखा देना है। इससे तो मानव पशु समान स्वार्थ पूर्ति में ही आजीवन लगा रहता है। वस्तुतः शिक्षा का लक्ष्य है मानव संतान को मानवीय गुणों से सम्पन्न करना। ऐसी ही शिक्षा पाते हुए गुरू वशिष्ठ के आश्रम में राजा दशरथ के पुत्र।

Education is not merely acquiring information and an ability to earn a Living. This only fosters individualism. To inculcate humane qualities in the new generation, complimentarily should be recognized as the real essence of education by our teachers. Raja Dashratha's sons received this kind of education in guru Vashishtha's ashram.